कृष्ण भक्त कवियों का कीर्तन परम्परा के विकास में योगदान

राधा कमल*

भगवान श्री कृष्ण पूर्ण ब्रह्म है तथा उनकी भक्ति को रसोपासना कहा जाता है इसलिए कृष्ण भक्ति का सर्वोतम साधन ''कीर्तन'' को माना गया है। जिसका समर्थन विभिन्न वैष्णव तथा अन्य सप्रदायों ने भी किया है। ईश्वर के नाम, गुण तथा लीला का प्रेम एवं श्रद्धा के साथ स्तुति गान करना ''कीर्तन'' कहलाता है।

''नाम गुणलीला दीना मुन्यै भीषा नु कीर्तनम्''

कीर्तन के पितामह एवं भक्ति के सर्वोच्च आचार्य नारद जी ने भी संकीर्तन की महिमा का वर्णन किया है।

''संकीर्त्यमानः शोध्रमेवाविर्भवति अनुभावयतिच च भक्तान''

अर्थात्– प्रभु प्राप्ति का सबसे सरल एवं शीघ्र उपाय कीर्तन है।

''सर्वाभ्स्नपनं पर विजयते न्मरनपन पर विजयते श्री कृष्ण संकीर्तनम''

अर्थात– कृष्ण नाम कीर्तन ही सब अनर्थों का नाशक एवं सभी मंगलो का मूल है।

कृष्ण भक्ति एवं संगीतात्मक कीर्तन का संबंध बहुत गहन है। जिसको विभिन्न भक्त कवियों एंव संगीतज्ञयों ने और भी दृढ़ किया है। गौड़ीय सम्प्रदाय के प्रर्वतक श्री चैतन्य महाप्रभु को भी श्री कृष्ण नाम संकीर्तन तथा लीलागान अत्यंत प्रिय था। इसके इलावा वल्लभ, राधा रमणीय, हरिदासी सम्प्रदायों तथा अन्य भक्त कवियों जिन्होने कीर्तन परम्परा को प्रधानता देते हुए, इसके विकास के लिए योगदान दिया, उनका वर्णन निम्नलिखित है।

वल्लभ सम्प्रदाय के भक्त कवि– वल्लभ सम्प्रदाय में ही प्रसिद्ध अष्टछाप के कवि हुए है। इस सम्प्रदाय में ध्रुपद और धमार का गायन प्रचलन में है एवं श्री नाथ जी की उपासना में कीर्तन उन्ही गायन शैलियों द्धारा किया जाता है। गायन के साथ मृंदग, शंख, घंटा, करताल, मंजीरा, नगाडा ढोल और शहनाई आदि वाद्यों का भी प्रयोग होता है। वल्लभ सम्प्रदाय के प्रमुख भक्त कवि निम्नलिखित है।

सूरदास (1537–1640)–यूं तो अष्टछाप के आठों कवि उच्चकोटि के भक्त तथा गवैये थे। किन्तु उनमें सर्वश्रेष्ठ स्थान श्री सूरदास का ही है। ''आचार्यों की छाप लगी हुई आठ वीणायें जब श्री कृष्ण का प्रेम–लीला कीर्तन करने उठीं तो उनमें सबसे ऊँची, सुरीली और मधुर झंकार अंधे कवि सूरदास की वाणी की थी।''

***शोद्यार्थी, संगीत विभाग पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला।**

नाभादास जी ने अपने भक्तमाल में सूरदास के काव्य की प्रशंसा करते हुए लिखा है :

''सूर कवित सुन कौन कवि जो नाहि सिर चालन करे।''

ऐसा कौन सा व्यक्ति है जो सूरदास की कविता को सुनकर प्रशंसा में सिर ना हिला दे।

ईश्वर ने उनको दिव्य दृष्टि दी जिससे इन्हें हृदय में हरि की लीला दिखाई देती थी। इन्होंने कृष्ण के जन्म, कर्म, गुण और रूप सबको अपनी दिव्य दृष्टि से देखा और अपनी रचना से उन्हें प्रकाशित किया। जो कोई सूर के गाये हुए भगवत गुणों को सुनता है उसकी बुद्धि निर्मल और गद्‌गद् हो जाती है।

''परमानन्द अरू सूर मिलि गाई सब ब्रज रीती,
भूलि जात विधि भजन की सुनि गोपिन की प्रीति''

सन्तदास ने भी सूरदास के गान, कीर्तन तथा ख्याति की प्रशंसा की है।

''सूर के समान और भक्त नही पाइये
सेवक श्री वल्लभ के तिहूं लोक गाइये
गुनी तान गानिन परिपूरन अवलोकन को।

परमानंददास (1550–1640)–नाभादास जी ने अपन भक्तमाल में परमांनददास जी के कीर्तन तथा गान की प्रशंसा करते हुए लिखा है।

''ब्रजवधु रीती कलियुग विषे, परमानंद भयौ प्रेमकेत।
पेगउ बाल कैसोर गोप लीला सब गाई।
अचरत कहा यह बात हुतौ पहिलो जु सखाई।।
नैननि नीर प्रवाह। रहत रोमांच रैन दिन।''

परमानंददास जी श्रीकृष्ण की बाल तथा किशोर अवस्था के कीर्तन इतने सुन्दर गाया करते थे कि सुनने वाले भावमग्न हो जाते थे।

''आयु करे कीर्तन सुन्दर सु गवाही
जे कोई सुने हिये हरितो बहुते महा
वैसे ही सुर गावत अनभै वरनो कहा।''

इसमें से यही विदित होता है कि परमानन्ददास जी कीर्तन में अत्यन्त प्रवीण थे। उनके गाये हुए कीर्तन को जो कोई सुनता या गाता था उसको परम संतुष्टि प्राप्त होती थी। उनके गाये हुए अधिकांश पद बाल भाव, कान्ता–भाव और दास भाव की भक्ति से परिपूर्ण है।व्यास जी ने भी ''व्यास–वाणी'' मे परमानन्द जी की गायन–कला तथा कीर्तन–भजन का स्मरण करते हुए कहा है।

''परमानंददास बिनु को अब लीला गाय सुनावै।''

कुभंनदास (1525–1639)–कुभंनदासजी पुष्टि–सम्प्रदाय से दीक्षित

थे। ये संगीत में अति प्रवीण थे तथा मधुर कंठ से बहुत सुन्दर कीर्तन करते थे। इसलिए आचार्य जी ने कुंभनदास जी को कीर्तन की सेवा सौंप दी।

कुभंनदास जी भक्ति रस का गान किया करते थे और स्वयं पद बना कर गाते थे–

''कुंभन कृष्णदास गिरधर से कीनी सांची प्रीति।
कर्म धर्म पद छॉडि के गाई निज रस रीति''।।
जाको को मनमोहन अंगीकार करे
एकौ केस रवसै नही सिरते जो जग वैर परै।
भक्तन को कहा सीकरी सो काम (सो पद, राग–सारंग)

कुभंनदास एकमात्र अपने ईष्टदेव को रिझाने के लिए कीर्तन किया करते थे और तथा उन्होने सदा उनकी प्रशंसा के ही गीत गाए है।

कृष्णदास (1552–1635)–कुभंनदास भगवान के भजन–कीर्तन में बहुत प्रवीण थे तथा श्री राधाकृष्ण का भजन ही उनका एकमात्र दृढ़ व्रत था। कृष्णदास की संगीत में विशेष रूचि थी और वह संगीत–कला के पारखी तथ उपासक थे। कृष्णदास की संगीत प्रियता के उदाहरण स्वरूप एक वर्णन मिलता है कि ''वे एक बार मन्दिर के कार्यवश आगरा गए। वहां उन्होंने एक सुन्दरी वैश्या को गायन और नृत्य करते हुए देखा। वे उसके संगीत पर इतने मोहित हुए कि श्री नाथ जी के सम्मुख नृत्यगान करने के लिए अपने साथ गोर्वधन ले गए। वह वैश्या ख्याल–टप्पा गाती थी जो कृष्णदास को पसंद नही था। अतः उन्होने अपने लिखे हुए कुछ पद उसे सिखा दिए और श्री नाथ जी के सम्मुख उन्ही को गाने को आदेश दिया।'' जिससे ज्ञात होता है कि कृष्णदास को संगीत का बहुत ज्ञान था। वह पदों को रागों में बुद्ध करके गाते थे तथा कला क्षेत्र में धार्मिक संकीर्णता अथवा ऊँच–नीच के भेदभाव को स्थान नही देते थे।

''कुभंन, कृष्णदास गिरधर सो किनी सांची प्रीति।
कर्म धर्म पथ छांडी कै गाई निज रस रीती''।।

नंददास (1590–1639)– नाभादास जी अपनी भक्तमाल में नंददास तथा उनके काव्य का वर्णन करते हुए कहा है–

''लीला पद रस रीती ग्रंथ–रचना में नागर।
सरस उक्ति जुत जुक्ति भक्ति रस गान उजागर''।।

भक्तमाल की इन पंक्तियों से यह ज्ञात होता है कि नंददास उच्चकोटि के कवि होने के साथ–साथ गायक भी थे। उनकी अपनी रचना 'भक्ति रस गान उजाकर' से प्रकट होता है कि नंददास भक्ति रस के गायन में निपुण थे।

चतुर्भुजदास (1597–1642)– चतुर्भुजदास जी भगवान की भक्ति का

गान वात्सल्य भाव से किया करते थे।

''परम भागवत अति भए भजन मांहि दुढ़ धीर,
चतुर्भुज वैष्णदास की बानी अति गंभीर।
सकल देस पावन कियो भागवत जसहि बढ़ाई,
जहां तहा निजी एक रस गाई भक्ति लड़ाई''

चतुर्भुजदास के पिता कुभंनदास अष्टछाप के प्रसिद्ध कवि तथा गायक थे। चतुर्भुजदास को संगीत की शिक्षा बाल्यकाल से ही अपने पिता के द्वारा प्राप्त हुई थी।

चतुर्भजदास श्री नाथ जी को रिझाने के लिए ही पद गाया करते थे तथा सदैव उनके कीर्तन और सेवा में संलग्न रहा करते थे। कृष्ण की बाल लीला का गान तथा उनके प्रेम में गाते–गाते मग्न हो जाना उनकी दिनचर्या थी।

''धन वंच चरन अबुज भजति कम वचन प्रतीति
वृन्दावन निज प्रेम की तब पावै रस रीति
कृष्णवंद के कहत की मन को भ्रम मिटि जाइ
विमल भजन सुख सिंधु में रहै चित ठहराइ''

श्रीहितहरिवंश–राधा–वल्लभीय सम्प्रदाय के प्रवर्तक स्वामी श्री हित हरिवंश जी, राधा–कृष्ण की सखी भाव से उपासना करते थे एवं भजन कीर्तन में मग्न रहा करते थे। नाभादास जी ने भक्तमाल में इनकी कृष्णोंपासना–विधि का वर्णन करते हुए कहा है–

''श्री हरिवंश गुसाई भजन की रीति सुकृत कोई जानि है''

गौड़ीय सम्प्रदाय के भक्त कवि–गौड़ीय सम्प्रदाय में नाम कीर्तन, लीला कीर्तन तथा पदावली कीर्तन को महत्ता दी जाती है तथा कीर्तन में आमतौर पर मृदंग, शंख, घंटा, करताल, मंजीरा, आदि वाद्यो का प्रयोग किया जाता है। इसके इलावा उत्सव आदि पर नगाडा, ढोल, तबला और शहनाई भी प्रयुक्त होते है। गौड़ीय सम्प्रदाय के प्रमुख भक्त कवि निम्नलिखिति है।

गदाधर भट्ट–गदाधर भट्ट जी गौड़ीय सम्प्रदाय के बहुत ही प्रवीण कीर्तनकार हुए है जिन्होने भक्ति कीर्तन की परम्परा का भली भांति अनुसरण किया है। वह भागवत सुनाया करते थे तथा भगवान की लीलाओं का कीर्तन किया करते थे जिसका समर्थन निम्नलिखित पद्यों से होता है:

''भट्ट गदाधर नाथ विद्या भजन प्रवीन।
सरस कथा बाणी मधुर सुनि रूचि होत नवीन''।।

हरिदास सम्प्रदाय के भक्त कवि– हरिदास सम्प्रदाय में भी नाम कीर्तन, लीला कीर्तन तथा पदावली कीर्तन पर बल दिया गया है तथा कीर्तन में आमतौर

पर तानपुरा, तबला, बंशी तथा एकतारा आदि वाद्यो का प्रयोग किया जाता है। हरिदास सम्प्रदाय के प्रमुख भक्त कवि निम्नलिखित है।

हरिदास स्वामी – हरिदास जी, हरिदासी सम्प्रदाय के प्रर्वतक तथा उच्च कोटि के संगीतज्ञ थे। उन्होने कीर्तन और गान से सखी की भाँति सेवा करते हुए श्यामा श्याम को संतुष्ट करना ही अपना धर्म माना।

''अनन्य वृपरते श्री स्वामी हरिदास
श्री कुंज बिहारी रोये बिन छिनन करी काहू की आस
सेवा सावधान अतिजान सुधर गावत दिल रात
औसौ रसिक भयौ नहिं है भुव मंण्डल आकास''

एक बार तानसेन की गायन कला को देख कर अकबर ने उनसे पूछा कि तानसेन क्या आपको कोई पराजित कर सकता है। मतलब आपसे भी निपुण गायक है क्या कोई। तानसेन ने कहा कि हरिदास स्वामी न केवल उनके सामने निपुण ही है अपितु वे मुझे गान–विद्या में पराजित भी कर सकते है, यह सुन कर अकबर साधु वेष में वृंदावन उनका गाना सुनने गऐ। तानसेन के अत्यधिक आग्रह करने पर भी हरिदास जी ने गाना सुनाना स्वीकार नहीं किया। तब तानसेन ने अपने गुरू के सम्मुख एक राग जानबुझ कर अशुद्ध रुप से गाया, हरिदास जी ने तत्काल तानसेन को ध्यान देने को कहा, और इस राग को इस प्रकार गाना चाहिए था कहकर स्वंय गा कर बताया हैं हरिदास जी तो भाव में गाते रहे और अकबर आनन्द में वहीं मुर्छित हो गये। अकबर ने चेतना आने पर तानसेन को कहा तुम इतना सुन्दर क्यों नही गाते। तानसेन ने कहा कि महाराज मैं आपकी आज्ञा पर गाता हूँ कितुं गुरूदेव अपनी आत्मा की आज्ञा पर गाते है।''

राधा रमणीय सम्प्रदाय के भक्त कवि–राधा रमणीय सम्प्रदाय, गौड़ीय सम्प्रदाय का ही एक अंग है तथा गौड़ीय सम्प्रदाय की भांति इस सम्प्रदाय में भी नाम कीर्तन, लीला कीर्तन तथा पदावली कीर्तन को महत्ता दी जाती है तथा कीर्तन में आमतौर पर मृंदग, शंख, घंटा, करताल, मंजीरा, आदि वाद्यों का प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा उत्सव आदि पर नगाडा, ढोल, तबला और शहनाई भी प्रयुक्त होते है। इस सम्प्रदाय के प्रमुख भक्त कवि निम्नलिखित है।

नीलसखी–नीलसखी कीर्तन में भक्ति भाव से नाम, लीला, और भाव रस के पद गाया करते थे।

''अब कहुँ कहिवे की कछु नॉही''
पावै कौन सहायक आपनौ, ऐसे या दुख मॉही
हितु न और हमारौ हरिराम, जिन रस–रीति निबाही
तेई स्याम 'नीलसजनी' कौ हित करिहै गठि बाही''

''सखी रूप नवनीत उपासक, अमृत निकस्या आनी''
''नीलसखी' प्रनमामि नित्य, से अदभुत कथन मथानी'

रामहरि–रामहरि को हरि राम भी कहा जाता था। उन्होंने अपने जो पद गाऐ उनमें ठाकुर श्री राधारमण जी और श्री चैतन्य महाप्रभु की वंदना की क्योकि इनके ईष्ट देव श्री राधरमण जी थे।

हरि राम है जौहरी, जौर परख प्रबीन
तिहि प्रेरे जो करी, जौहर भरी नवीन
''गोकुलचंद, मुकंद, हरि, मोहन, माखन–चोर''
बनमाली, गोबिंद, विभु, गिरधर, श्यामकिशोर
केशव, माधव, मुरलीधर, दामोदर, गोपाल
कुंज बिहारी, चिकतियाँ, पुरूषोतम, नंदलाल।

दक्षसखी–दक्षसखी गोस्वामी गोपाल भट्ट जी की शिष्य परंपरा में हुए थे। उनके इष्टदेव ठाकुर श्री राधारमण जी थे, भाव विभोर होकर जब आप कीर्तन करते थे तब राधारमण का नाम ही गुजांयमान होता था

''जयति–जयति राधारमण, श्री चैतन्य कृपाल
जयति सखी गन वृदं श्री, जयति भट्ट गोपाल
श्री राधारमण चरन उर लहों। अष्ट काल की लीला कहौ''

अन्य सम्प्रदायों के भक्त कवि –

मीराबाई–स्त्रियों में काव्य और संगीत की उच्चतम साधना में मीराबाई का नाम सबस ऊपर मिलता है, जो कि काव्य और संगीत कला दोनों में सिद्धहस्त थी। भक्ति–भाव के उल्लास में रस की धारा उमड़ाने वाली कृष्ण पुजारिन मीराबाई एक विशुद्ध कवयित्री गायिका थीं।

नाभदास ने भक्तमाल में मीरा के कीर्तन के बारे में लिखा है

''लोक लाज कुल श्रृंखला तजि मीरा गिरिधर भजो।
स्दृश गोपिका प्रेम प्रकट कलियुगहि दिखायो''

इस पद से ज्ञात होता है कि मीरा लोक लज्जा का उल्लंघन करके गिरिधर का गुण–गान किया करती थी। मीरा संगीतज्ञ तथा नृत्य–कुशल भी थी।

''राणी चितौड़ की
सब गुण छाडि छनक मैं वाली चाली लगायी रणछोड की
ताल बजावे गोविंद गुण गावे लाज तजी वउन्तहोड़ा की
निरतति करै नीकी होई नाचै भगति कुमावै बाई चौड़ा की
हरिदास मीरा बड़ भागाणे सब राणयां सिमोडा की।''

इस पद से भी ज्ञात होता है कि मीरा बेसुध होकर ताल–लय में नाचा

तथा गाया करती थी। वृन्दावन में आकर मीरा का कीर्तन और भी विकसित हो गया। इस प्रकार अनुकूल वातावरण पाकर मीरा अपने युग की सर्वश्रेष्ठ कवियत्री हो गई।

ललित किशोरी–ललित किशोरी जी चैतन्य मत अनुयायी भक्त कवियों में प्रसिद्ध हुए है। उनका मूल नाम शाह कुंदन लाल था। ललित किशोरी जी जब कीर्तन में ये पद गाते थे तो सारा समाज भाव विभोर हो जाता था।

''बिन अवलोक गौर–श्याम छवि, असुवन जल उपराय रही
लाज जाल नही फँसत अरबरी, छवि–निधि प्रेम–प्रवाह बही
ललित किशोरी' इहै अचंभौ जल भीतर अकुलाय रही''

ललितलडैती–ललितलडैती जी भी ब्रज के भक्तों और कवियों में से एक हुए है

''श्याम रूप धरि लीनो प्यारी
मेरे मुकुट कटि सोहे काछिनि, पीताम्बर की दमकन प्यारी
नख–सिख क्यों श्रृंगार मनोहर, जाही देखी हुलसत हिये नारी
ललितलडैती वाही भेष सो, संग सखी नंद भवन सिधारी''

बांकेपिया–बांकेपिया के पदो में मधुर मिलन के भाव मिलते है और वह इन भावों को लेकर ही कीर्तन किया करते थे।

''देखन को ब्रज प्रेम, कृष्णा निज रूप दुराया
माया बस कोऊ ग्राम वासिन देख न पायो
ग्राम–ग्राम डोले दोऊ देखे ब्रज–व्यवहार
करे कृष्ण चर्च सवे बालक–नर अरू नार''

रामदास–ब्रज भाषा में 'कृष्णरंगी' रचना के नाम से है।

''राम–कृष्ण गावो उठि भोर
सुंदर सुखद मनोरम दोऊ, भत, जनति चित–चोर
जनम–जनम के दुख नसावत, पा–ताप की कोर
कृपा प्रभु की सहजहि पावौ, मिले संत सिरमोर
भवसागर को डवार जबर है जाकौ ओर न छोर
बानो चहौ पार पुनि पकरा; कृष्णरंगी' मन डोर''

तीर्थराम, नाथभट्ट, केशवदास, गरीबदास, राधिकानाथ, लाखदास, नारायणदास क्षेत्रिय, रामहरि राधाचरण, राधालाल आदि और भी कवि हुए है जिन्होंने ब्रज क्षेत्र में कृष्ण भक्ति कीर्तन में योगदान दिया है।

कृष्ण भक्त कवियों का कीर्तन एवं साहित्य क्षेत्र के विकास में बहुमुल्य योगदान रहा है। कृष्ण भक्ति में कीर्तन को प्रधानता दी गई है तथा कीर्तन को

संगीतमय काव्य का रूप देकर इन महान कवि संतों ने इस क्षेत्र को अमूल्य निधि प्रदान की है। अगर हरिदास जी ने कीर्तन एवं भक्ति क्षेत्र में अपनी काव्य एवं पद्यात्मक रचनाओं से योगदान दिया वही उन्होंने अपनी संगीत प्रवीणता से समाज को तानसेन एवं बैजू बावरा जैसे महान संगीतज्ञय भी प्रदान किए जिन्होंने संगीत के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट निपुणता से विश्व भर में प्रसिद्धि प्राप्त की, वही अष्टछाप के कवियों ने भी संगीत एवं साहित्य के क्षेत्र को समृद्ध किया। अतः यह कहना होगा की भक्ति की धारा में विभिन्न सम्प्रदायों ने कीर्तन परम्परा एवं संगीत के मिश्रण से भक्ति को सुलभ एंव रसमय बनाकर सरलता प्रदान की।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची –

क्रमांक	**पुस्तक का नाम**	**लेखक**
1.	नरदीय भक्ति सूत्र	नारद
2.	भक्तमाल	नाभादास
3.	भ्रमर गीत–सार	अःप. रामचन्द्र शुक्ल
4.	84 वैष्णव की वार्ता	परमानंद दास
5.	भक्त नामावली	ध्रुवदास कृत
6.	अष्टछाप और वल्लभ सम्प्रदाय	डा. दीप दयाल गुप्त
7.	हिंदी के कृष्ण भक्ति कालीन साहित्य में संगीत	उषा गुप्ता
8.	चैतन्य मत ओर ब्रज साहित्य	डा. प्रभुदयाल मितल
9.	भक्ति रसामृत सिंधु	रूप गोस्वामी, संपा भक्ति सिद्धांत सरस्वती
10.	व्यास वाणी	श्री हरि राम व्यास